जमाअत अहमदिया के संस्थापक की ख़त्मे नुबुव्वत पर ज्ञानवर्धक व्याख्या

भाषण

रविवार 31 दिसम्बर 2017 ई० क़ादियान दारुल अमान में अहमदिया मुस्लिम जमाअत के जलसा सालाना के अवसर पर हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ताहिर हाल, बैतुल फ़ुतूह लन्दन से MTA द्वारा सीधा प्रसारण

Published in India in 2019 By Shoba Noor-ul-Islam
Sadr Anjuman Ahmadiyya Qadian. 14351 -Punjab, India
Printed in India @ Fazl-e-Umar Printing Press Qadian.
Copies - 2000

For further information Please Visit:
www.alislam.org | www.ahmadiyyamuslimjamaat.in | www.mta.tv
Feedback : www.ahmadiyyamuslimjamaat.in/feedback
/islaminind /islaminind /+islaminindia /islaminindia /c/islaminindia
official blog: www.lightofislam.in

Noor-ul-Islam Toll Free Number 1800-3010-2131 (9:30am to 10:30pm)
Muslim Television Ahmadiyya International
(www.mta.tv)

Satellite: Asia sat 7s, Degree:105.5 East, Frequency 3760H Symbol Rate: 26000 EFC:7/8 C.Band 4 feet Dish Antenna+Receiver-DVB-S,

EutelsatE70B, Degree:70°East, Frequency:11211, Symbol Rate:5111, Polarization-HorizontalQPSK-1/2, Data Rate; 4.71mb KU Band 2 feet Dish Antenna+Receiver-DVB-S2

जमाअत अहमदिया के संस्थापक की ख़त्मे नुबुव्वत पर ज्ञानवर्धक व्याख्या

भाषण

रविवार 31 दिसम्बर 2017 ई० क़ादियान दारुल अमान में अहमदिया मुस्लिम जमाअत के जलसा सालाना के अवसर पर हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ताहिर हाल, बैतुल फ़ुतूह लन्दन से MTA द्वारा सीधा प्रसारण

नाम पुस्तक : जमाअत अहमदिया के संस्थापक की ख़त्मे नुबुव्वत पर ज्ञानवर्धक व्याख्या
भाषण : हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस
अनुवादक : डाक्टर अन्सार अहमद, एम.ए., एम.फिल, पी एच,डी, पी.जी.डी.टी., आनर्स इन अरबिक
टाइप, सैटिंग : नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) मार्च 2019 ई०
संख्या : 2000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Lecture : Hazrat Mirza Masroor Ahmad Khalifatul Massiah V
Translator : Docter Ansar Ahmad, M.A., M.Phil, Ph.D, P.G.D.T., Hons in Arabic
Type Setting : Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi silsila
Edition : 1st Edition (Hindi) February 2019
Quantity : 2000
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

"जमाअत अहमदिया के संस्थापक की ख़त्मे नुबुव्वत पर ज्ञानवर्धक व्याख्या" पुस्तिका का यह हिन्दी अनुवाद डाक्टर अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रीव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम इब्नुल मेहदी एम. ए. और मुकर्रम मुहियुद्दीन फ़रीद एम. ए. ने इसका रीव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सबको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

यह अत्यंत अन्याय एवं मूर्खतापूर्ण आरोप है जो जमाअत अहमदिया पर लगाया जाता है कि हम ख़त्मे नुबुव्वत की आस्था के इन्कारी हैं।

जमाअत अहमदिया अपने प्रारंभ से आज तक घोषणा कर रही है कि यह नाममात्र के उलेमा झूठ कहते हैं और इसका वास्तविकता से दूर का भी संबंध नहीं है।

आज यह जलसा भी जो दुनिया में देखा जा रहा है यह भी अल्लाह तआला के समर्थन और सहायता का ही प्रमाण है, अन्यथा हमारे साधन यदि देखें तो यह असंभव है कि हम दुनिया के हर कोने में इस्लाम का वास्तविक संदेश पहुंचा सकें। अतः यह प्रचार के कार्य ख़ुदा तआला स्वयं कर रहा है और यह भी प्रचार का ही एक भाग है कि हम टेलीविज़न और सोशल मीडिया के माध्यम से ख़त्मे नुबुव्वत की वास्तविकता को भी दुनिया को बताएं, क्योंकि अल्लाह तआला ने हमें इस कर्त्तव्य के लिए नियुक्त किया है और यही हमारे आक़ा-व-मौला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला का आदेश है कि दुनिया में इस्लाम का प्रचार करना है और यही आदेश अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी है। और इस युग में इस्लाम के प्रसार के जो माध्यम अल्लाह तआला ने हमें दिए हैं वे मसीह मौऊद के युग से ही सम्बद्ध थे। इसलिए हम सब का यह कर्त्तव्य है कि प्रचार करें और दुनिया को बताएं कि ख़त्मे नुबुव्वत के वास्तविक अर्थ क्या हैं? इस्लाम की वास्तविक शिक्षा क्या है? और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा क्या है?

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के संदर्भ से ख़त्मे नुबुव्वत की ज्ञानवर्धक व्याख्या

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपने प्रिय रसूलु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म को पुनः उसकी असल अवस्था में स्थापित करने और फैलाने के लिए भेजा है और जिसको अल्लाह तआला ने भेजा है इस वादे के साथ भेजा है कि वह प्रभुत्व भी प्रदान करेगा और उसे सांसारिक हुकूमतों के प्रतिबंध, उलेमा के अत्याचार तथा व्यर्थ बातें फलने-फूलने से किस प्रकार रोक सकती हैं। हम ही हैं जिन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे दास की शिक्षा के अनुसार और उनके मिशन को जारी रखते हुए आज विश्व के 210 देशों में ख़ातमुन्नबिय्यीन के झंडे को लहरा दिया है।

यह हमारा ईमान है और हम इस ईमान पर अडिग हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और पवित्र क़ुर्आन ख़ातमुलकुतुब है और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे दास हैं। और वही मसीह मौऊद और ख़ातमुलख़ुलफ़ा हैं जिनके आने की सूचना हमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी थी और उसे अपना सलाम पहुंचाने का आदेश भी दिया था।

हमने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम उसी मसीह मौऊद और महदी मा'हूद से ही सीखे है जिन की जमाअत में सम्मिलित होने के कारण ये नाममात्र के उलेमा

हमें काफ़िर कहते हैं और इस्लाम के दायरे से बाहर निकालते हैं। अहमदियत के विरोधियों की इन बातों के कारण और शत्रुओं की शत्रुताओं के कारण आज हर अहमदी पर पहले से बढ़कर यह दायित्व लागू होता है कि वह अपनी ईमानी और व्यावहारिक हालत में एक ऐसा परिवर्तन लाए जो ख़ुदा तआला को हमसे निकटतम कर दे।

जलसा सालाना क़ादियान 2017 में 44 देशों के बीस हज़ार अड़तालीस लोग सम्मिलित हुए।

क़ादियान दारुल अमान में विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के जलसा सालाना के अवसर पर 31 दिसंबर 2017 ई. के दिन रविवार को अमीरुल मोमिनीन हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के समापन भाषण का ताहिर हाल "बैतुल फ़ुतूह" लंदन, से एम.टी.ए. के खबर पहुंचाने वाले माध्यमों (MEANS OF COMMUNICATION) से सीधा प्रसारण

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अहमदियत के विरोधी आजकल और हमेशा से अपने गुमान

में एक आरोप लगा रहे हैं और यह एक ऐसा बड़ा आरोप है जो उनके विचार में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा को इस्लाम के दायरे से बाहर करता है। आजकल मैंने इसलिए कहा कि हमेशा से यह आरोप है परन्तु आजकल बड़ी अधिकता और ज़ोर से लगाया जा रहा है और वह है नऊज़ुबिल्लाह जमाअत अहमदिया का ख़त्मे नुबुव्वत की आस्था से इन्कार। यदि वे अपने आरोप में सच्चे हैं तो निस्सन्देह जो वे कहते हैं सही है परन्तु यह बहुत बड़ा झूठ है। यह एक ऐसा आरोप है जिसका जमाअत अहमदिया मुस्लिमा से दूर का भी संबंध नहीं, अपितु हम तो यह आस्था रखते हैं और यही हमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे प्रेमी व मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया है कि जो व्यक्ति आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन नहीं मानता वह काफ़िर और इस्लाम के दायरे से बाहर है। यह अत्यन्त अन्याय एवं मूर्खतापूर्ण ऐतिराज़ और आरोप है जो जमाअत अहमदिया पर लगाया जाता है कि नऊज़ुबिल्लाह हम ख़त्मे नुबुव्वत की आस्था के इन्कारी हैं। एक ओर तो हम अपने आप को मुसलमान कहें और दूसरी और जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों के अनुसार ख़त्मे नुबुव्वत की आस्था को न मानकर काफ़िर बन जाएं।

जमाअत अहमदिया अपने प्रारंभ से आज तक घोषणा कर रही है कि यह नाममात्र के उलेमा झूठ कहते हैं और इसका वास्तविकता से दूर का भी संबंध नहीं है, परन्तु सामान्य मुसलमानों को उन्होंने इतना भयभीत कर दिया है कि सामान्य तौर पर वे यह सोचने, समझने और सुनने के लिए तैयार ही नहीं होते कि अहमदी क्या कहते हैं। परन्तु जो

इस पर विचार करते हैं, हमारी बातें सुनते हैं, क़ुर्आन और हदीस को समझते हैं वे इस बात के क़ाइल हो जाते हैं कि वास्तव में अहमदी मुसलमान ही सच्चे मुसलमान हैं और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ातमुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे प्रेमी को मसीह मौऊद और महदी मा'हूद मानकर ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्तविक पद की पहचान हो सकती है।

"प्रायद्वीप पाक-व-हिन्द के नाममात्र के उलेमा अपने व्यक्तिगत लाभों को प्राप्त करने और अपनी मूर्खता को छुपाने के लिए अब एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं कि जिस प्रकार भी हो इन इलाकों के मुसलमानों को अहमदियों के निकट भी न आने दिया जाए। इसी प्रकार इन की कोशिशें दूसरे मुसलमान देशों में भी हैं कि यहां अहमदियत को बदनाम किया जाए और यही अब इनका हाल है कि इन्होंने बहुत से प्रतिनिधि मंडल अफ़्रीका में भेजने आरंभ कर दिए हैं। वहां से भी यह सूचनाएं आती हैं, उनको लालच दिए जाते हैं कि तुम अहमदियत छोड़ दो हम तुम्हें मस्जिदें बना कर देंगे, हम तुम्हारी सहायता करेंगे। परन्तु वे मुसलमान जिनको इस्लाम का कुछ पता भी नहीं था उन्होंने अहमदियत के द्वारा वास्तविक इस्लाम सीखा, नमाज़ सीखी, क़ुर्आन सीखा, वे ही उनको उत्तर दे रहे हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यह नए बैअत करने वाले बड़े दृढ़ हैं कि इतने लम्बे समय तक तुम लोगों को होश नहीं आया आज जब जमाअत अहमदिया ने आकर हमें क़ुर्आन पढ़ाया, हमें नमाज़ सिखाई, हमें मस्जिद बना कर दी, हमारे बच्चों की तरबियत की उन को क़ुर्आन पढ़ाया नमाज़ सिखाई और धार्मिक ज्ञान दिया अब तुम्हें विचार आया है इसलिए हमारे पास

से चले जाओ हम तुम्हारी बात मानने के लिए कभी भी तैयार नहीं परन्तु बहरहाल यह अपनी कोशिशें कर रहे हैं किन्तु उनको यह याद रखना चाहिए कि यह इन्सानी कोशिशें और योजनाएं ख़ुदा तआला की योजनाओं के सामने नहीं ठहर सकतीं यह ख़ुदा तआला का प्रारब्ध है कि उसने मसीह मौऊद के मानने वालों को बहुत संख्या में परिवर्तित करना है इन्शा अल्लाह तआला। तो इस दृष्टि से तो हम अहमदियों को तनिक भी संदेह नहीं है कि ये अहमदियत की उन्नति और प्रगति के किसी प्रकार भी नहीं रोक सकेंगे। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वयं इल्हाम द्वारा कहा था कि मैं तुम्हें सम्मान दूंगा और बढ़ाऊंगा।"

(आसमानी फैसला रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 4, पृष्ठ - 342)

"और हम प्रतिदिन यह दृश्य देखते हैं कि अहमदियत के विरोधियों के एड़ी चोटी का ज़ोर लगाने के बावजूद, इस्लाम की आधारभूत आस्था के संबंध में अहमदियों के बारे में यह प्रसिद्ध करने के बावजूद कि ये इसको मानते नहीं, सैकड़ों हज़ारों लोग प्रतिदिन अहमदियत में सम्मिलित होते हैं, और मुसलमानों में ऐसे भी सम्मिलित होते हैं अल्लाह तआला ने आप को फ़रमाया कि - मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊँगा"

(अलहकम जिल्द - 2, नं 5,6 27 मार्च तथा 6 अप्रैल 1898 ई० पृष्ठ - 13)

और हमें कुछ लोगों की जानकारी भी नहीं होती कि वे कहां रहते हैं परन्तु वे कोशिश करके हमसे सम्पर्क करते हैं कि उन्हें किस प्रकार अहमदियत का ज्ञान हुआ और अब वे जमाअत में सम्मिलित होना चाहते हैं। वर्तमान युग की उन्नति में स्वयं ही इस प्रकार के

सामान पैदा कर दिए हैं। फिर विरोधियों की अपनी गतिविधियां, उनके अपने भाषण, उनकी अपनी ग़लत बातें जो सोशल मीडिया के द्वारा आजकल फैल रही हैं और अपने वातावरण में अहमदियों के बारे में व्यर्थ बातें करते हैं। उनकी यही बातें नेक स्वभाव वाले लोगों को हमारी ओर ध्यान दिलाती हैं। तो यह अल्लाह तआला के कार्य हैं जिन्हें मानवीय षडयंत्र रोक नहीं सकतीं।

आज यह जलसा भी जो दुनिया में देखा जा रहा है यह भी अल्लाह तआला के समर्थन एवं सहायता का ही प्रमाण है अन्यथा हमारे साधन देखें तो यह असंभव है कि दुनिया के हर कोने में हम इस्लाम का वास्तविक संदेश पहुंचा सकें। तो यह प्रचार के कार्य ख़ुदा तआला स्वयं कर रहा है और यह भी प्रचार का भाग है कि हम टेलीविजन के माध्यम, सोशल मीडिया के माध्यम से ख़त्मे नुबुव्वत की वास्तविकता को भी दुनिया को बताएं क्योंकि अल्लाह तआला ने हमें इस कर्त्तव्य के लिए नियुक्त किया है और यही हमारे आक़ा-व-मौला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला का आदेश है कि दुनिया में इस्लाम का प्रचार करना है और अल्लाह तआला का यही आदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को है। और इस युग में इस्लाम के प्रचार के जो माध्यम अल्लाह तआला ने हमें दिए हैं वे मसीह मौऊद के युग से ही सम्बद्ध थे।

इसलिए अब हम सब का कर्त्तव्य है कि प्रचार करें और दुनिया को बताएं कि ख़त्मे नुबुव्वत के वास्तविक मायने क्या हैं? इस्लाम की वास्तविक शिक्षा क्या है? और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

का दावा क्या है?

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ातमुन्नबिय्यीन होने और आप के बुलन्द मुक़ाम-व-पद के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में ही आज मैं कुछ वर्णन करूँगा। बहुत से ग़ैर अहमदी मुसलमान भी ऐसे हैं जो हमारे प्रोग्राम देखते हैं और सुनते हैं उनके लिए भी ये बातें मार्ग-दर्शन का माध्यम बनती हैं।

आपने यह फ़रमाया कि मेरा तो पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला के उस आदेश पर पूर्ण ईमान है कि जहां ख़ुदा तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन ठहरा दिया। वहां आपकी शरीअत को भी पूर्ण कर दिया और اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ की घोषणा भी कर दी। धर्म भी पूर्ण हो चुका है और नेमत भी पूर्ण हो चुकी और ख़ुदा तआला के नज़दीक अब इस्लाम ही मनोवांछित धर्म है और अब ख़ुदा के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नेक कार्यों के मार्ग को छोड़कर कोई अन्य मार्ग ग्रहण करना बिदअतें हैं।

आप अपने विरोधियों को संबोधित करते हुए फ़रमाते हैं कि :-

"अब बताओ कि यह मनगढ़त वज़ीफ़े (मंत्रों को जप) हैं तो जो तुमने ग्रहण कर लिए हैं और दरूद हैं और कुछ शे'रों को जैसे बुल्ले शाह के शे'र हैं उनको ही पर्याप्त समझ लिया गया है, उन्हीं को धर्म समझ लिया गया है। पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा को भुला दिया गया है। उनकी नमाज़ों में आनन्द नहीं रहा, और नमाज़ों में आनन्द प्राप्त होने की बजाए अपने बनाए हुए मनगढ़त वज़ीफों पर इनको आत्म-विस्मृति छा जाती है और अपनी पगड़ियाँ उतार कर फेंक देते हैं, नाच-गाने आरंभ हो जाते हैं, गाने तो नहीं नाचना आरंभ हो

जाते हैं। धमाल डाल रहे होते हैं। आप ने फ़रमाया कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में ऐसी हरकतें होती थीं? और यह बातें जो आप ने फ़रमाई हैं यह केवल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग की बातें नहीं है अपितु आजकल भी इसी प्रकार की मज्लिसें और मुसलमानों में होती हैं। भांगड़ा डाल रहे होते हैं। आजकल सोशल मीडिया पर उनकी यह हरकतें देखी जा सकती हैं। इन लोगों ने विचित्र-विचित्र प्रकार के हुलिए बनाए होते हैं। बहरहाल आप फ़रमाते हैं कि तुम मुझ पर तो यह आरोप लगाते हो कि मैंने नुबुव्वत का दावा कर दिया और ख़त्मे नुबुव्वत की मुहर को तोड़ दिया जैसे कि मैं कोई स्थाई नुबुव्वत का दावा करता हूँ। आप ने फ़रमाया कि मेरा दावा तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ग़ुलामी में आकर आपकी शरीअत पर अमल करना और कराना है। परन्तु तुम अपने आप को नहीं देखते कि झूठी नुबुव्वत तो तुम लोगों ने स्वयं बनाई हुई है जबकि रसूल के विरुद्ध तथा क़ुर्आन के विरुद्ध तो तुम यह नए-नए दरूद और जिक्र (जप) निकाल रहे हो। यदि इंसाफ है तो बताओ कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र शिक्षा और उसका पालन करने में हम कुछ कमी बेशी कर रहे हैं या तुम लोग? आप फ़रमाते हैं कि क्या अर्र: का स्मरण करना मैंने बताया है या तुम्हारा आविष्कार है? और इसी प्रकार अल्लाहू की मज्लिसें हैं, नमाज़ और दुआओं की ओर कुछ ध्यान नहीं है और पता नहीं कि क्या कुछ रस्में निकाली हुई हैं, क्या बिदअतें पैदा की हुई हैं, पीरों फ़कीरों की कब्रों पर सज्दे करते हैं। इस्लाम धर्म में यह सब बिदअतें इन लोगों ने अपने उद्देश्य प्राप्त

करने के लिए दाखिल की हुई हैं। आप फ़रमाते हैं कि यह दोष मुझे न दो अपनी हालतों को देखो।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द - 3, पृष्ठ - 88 से 90, संस्करण 1985 लन्दन से प्रकाशित)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मक़ाम और पद को वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि :-

"निस्सन्देह याद रखो कि कोई व्यक्ति सच्चा मुसलमान नहीं हो सकता और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुयायी नहीं बन सकता जब तक आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन न माने, जब तक इन मुहदसात से अलग नहीं होता (अर्थात् जो नई-नई बिदअतें अपने धर्म में पैदा कर लीं हैं) और अपने कथन एवं कर्म से आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ख़ातमुन्नबिय्यीन नहीं मानता कुछ नहीं।"

आप फ़रमाते हैं कि सा'दी ने क्या अच्छा कहा है कि -

بزہدوورع کوش وصدق وصفا
ولیکن میفزائے ہر مصطفیٰ

(अर्थात् संयम-व-तक्वा तथा श्रद्धा-व-निष्ठा के लिए अवश्य कोशिश कर परन्तु मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए तरीके से बाहर न जा।)

आप ने फ़रमाया कि मेरे आने का उद्देश्य तो केवल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सम्मान और नुबुव्वत को दोबारा क़ायम करना है। आप फ़रमाते हैं कि :-

"हमारा उद्देश्य जिसके लिए ख़ुदा तआला ने हमारे दिल में

जोश डाला है कि केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत क़ायम की जाए जो रहती दुनिया तक के लिए ख़ुदा तआला ने क़ायम की है और समस्त नुबुव्वतों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाए जो इन लोगों ने अपनी बिदअतों के द्वारा क़ायम की हैं। इन समस्त गद्दियों को देख लो।"

(अर्थात् पीरों फ़कीरों की गद्दियां) और क्रियात्मक तौर पर देख लो कि क्या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़त्मे नुबुव्वत पर हम ईमान लाए हैं या वे?

फिर एक जगह इस विषय को जारी रखते हुए आप फ़रमाते हैं कि :-

"अन्याय और दुष्टता की बात है कि ख़त्मे नुबुव्वत से ख़ुदा तआला का इतना ही आशय ठहराया जाए कि मुंह से ही ख़ातमुन्नबिय्यीन मानो और करतूतें वही करो जो तुम स्वयं पसंद करो और अपनी एक अलग शरीअत बना लो।"

ग़ैर अहमदियों ने विचित्र प्रकार की बिदअतें बनाई हुई हैं -

"बगदादी नमाज़, मा'कूस नमाज़ इत्यादि आविष्कृत की हुई हैं। क्या पवित्र क़ुर्आन या नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अमल में भी इसका कहीं पता लगता है? और ऐसा ही या शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी शैयन लिल्लाहि कहना इसका सबूत भी कहीं पवित्र क़ुर्आन से मिलता है? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी का अस्तित्व भी न था।" फिर यह किसने बताया था।

"शर्म करो! क्या इस्लामी शरीअत की पाबंदी और अनिवार्य कर

लेना इसी का नाम है?"

आप फ़रमाते हैं -

"अब स्वयं ही फैसला करो कि क्या इन बातों को मान कर और ऐसे अमल रखकर तुम इस योग्य हो कि मुझे दोष दो कि मैंने ख़ातमुन्नबिय्यीन की मुहर को तोड़ा है। असल और सच्ची बात यही है कि यदि तुम अपनी मस्जिदों में बिदअतों को दाख़िल न करते और ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्ची नुबुव्वत पर ईमान लाकर आप की कार्य पद्धति तथा पदचिन्हों को अपना इमाम बनाकर चलते तो फिर मेरे आने ही की क्या आवश्यकता थी?"

आप फ़रमाते हैं कि :-

"तुम्हारी इन बिदअतों और नई नुबुव्वतों ने ही अल्लाह तआला के स्वाभिमान को प्रेरणा दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चादर में एक व्यक्ति को अवतरित करे जो इन झूठी नुबुव्वतों के पुतलों को मिट कर मिट्टी में मिला दे। अतः इसी कार्य के लिए ख़ुदा ने मुझे मामूर करके भेजा है।"

आप फ़रमाते हैं -

"गद्दीनशीनों को सज्दा करना या उनके मक़ानों का तवाफ़ (परिक्रमा) करना यह तो बिल्कुल मामूली और सामान्य बातें हैं।"

फिर आप अपने अवतरण के उद्देश्य और जमाअत की स्थापना के उद्देश्य का वर्णन करते हुए तथा ख़त्मे नुबुव्वत की वास्तविकता क्या है को स्पष्ट करते हुए अतिरिक्त फ़रमाते हैं कि :-

"अल्लाह तआला ने इस जमाअत को इसलिए क़ायम किया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत और सम्मान

को दोबारा स्थापित करें। एक व्यक्ति जो किसी का प्रेमी कहलाता है यदि उस जैसे हज़ारों और भी हों तो उसके इश्क़ और प्रेम की विशिष्टता क्या रही। तो फिर यदि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इश्क़ और प्रेम में फ़ना हैं जैसा कि यह दावा करते हैं तो फिर क्या बात है कि हज़ारों ख़ानक़ाहों (फ़कीरों के आश्रम) और मज़ारों की इबादत करते हैं।"

एक ओर कहते हैं कि हम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रेम में फ़ना हैं, दूसरी ओर ख़ानक़ाहों और मज़ारों पर केवल दुआ के लिए नहीं जाते अपितु इबादत करते हैं, पूजा करते हैं, सज्दा करते हैं।

आप फ़रमाते हैं कि :-

"मदीना तय्यिबा तो जाते हैं।"

ठीक है जाते हैं, हज और उमरा के लिए भी जाते हैं और दुआ भी करते हैं -

"परन्तु अजमेर और दूसरी ख़ानक़ाहों पर नंगे सर और नंगे पांव जाते हैं।"

इनको भी वही मक़ाम दिया हुआ है -

"पाकपत्तन की खिड़की में से गुज़र जाना ही मुक्ति के लिए पर्याप्त समझते हैं।"

ये भी इन्होंने बिदअतें पैदा की हुई हैं वहां बुज़ुर्ग की खिड़की में से गुज़र जाओ, दरवाज़े में से गुज़र जाओ तो मुक्ति मिल जाएगी।

फ़रमाया कि -

"किसी ने कोई झण्डा खड़ा कर रखा है, किसी ने कोई और

रूप ग्रहण कर रखा है। इन लोगों के उर्सों और मेलों को देखकर एक सच्चे मुसलमान का दिल कांप जाता है कि यह इन्होंने क्या बना रखा है।"

आप फ़रमाते हैं कि -

"यदि ख़ुदा तआला को इस्लाम की ग़ैरत न होती और

(आले इमरान - 20) اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ

ख़ुदा का कलाम न होता और उसने न फ़रमाया होता (कि)

(अलहिज्र - 10) اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ

तो निस्सन्देह आज वह हालत इस्लाम की हो गई थी कि उसके मिटने में कोई भी संदेह नहीं हो सकता था परन्तु अल्लाह तआला की ग़ैरत ने जोश मारा और उसकी रहमत (दया) और सुरक्षा के वादे ने निर्णय किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बुरूज़ को फिर उतारे और इस युग में आप की नुबुव्वत को नए सिरे से जीवित करके दिखा दे इसलिए उसने इस सिलसिले को क़ायम किया और मुझे मामूर और महदी बनाकर भेजा।"

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपने प्रेमी के धर्म को दोबारा दुनिया में उसकी असली हालत में क़ायम करने और फैलाने के लिए भेजा है और जिसको अल्लाह तआला ने भेजा है और इस वादे के साथ भेजा है कि वह विजय भी प्रदान करेगा। उसे सांसारिक हुकूमतों के लगाए हुए प्रतिबंधों तथा उलेमा के अत्याचारों और व्यर्थ बातें किस प्रकार फलने-फूलने से रोक सकती हैं।

हम ही हैं जिन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

सच्चे दास की शिक्षा के अनुसार तथा उनके मिशन को जारी रखते हुए आज दुनिया के 210 देशों में ख़ातमुन्नबिय्यीन के झंडे को लहरा दिया है।

और इस बात को स्पष्ट करते हुए कि अल्लाह तआला ने सिलसिले की स्थापना किस उद्देश्य से की है? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"आज दो प्रकार के शिर्क पैदा हो गए हैं जिन्होंने इस्लाम को मिटाने के लिए असीम कोशिश की और यदि ख़ुदा तआला की कृपा शामिल न होती तो करीब था कि ख़ुदा तआला के चुने हुए और मनोवांछित धर्म का नामो निशान मिट जाता परन्तु चूँकि उसने वादा किया हुआ था -

(अलहिज्र - 10) اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ

यह वादा-ए-सुरक्षा चाहता था कि जब लूटमार का अवसर हो तो वह खबर ले।"

आप फ़रमाते हैं कि -

"चौकीदार का काम है कि वह सेंध लगाने वालों को पूछते हैं और दूसरे अपराध करने वालों को देखकर अपने सुपुर्द किए कर्त्तव्य को काम में लाते हैं इसी प्रकार आज चूँकि फ़ित्ने एकत्र हो गए थे।"

बहुत से फ़ित्ने इकट्ठे हो गए थे।

"और इस्लाम के किले पर हर प्रकार के विरोधी हथियार बांधकर आक्रमण करने को तैयार हो गए थे। इसलिए ख़ुदा तआला चाहता है कि मिन्हाजे-नुबुव्वत (नुबुव्वत की पद्धति) स्थापित करे। वास्तव में यह बातें इस्लाम के विरोध में एक लम्बे समय से हो रही

थीं और अन्ततः अब फूट निकलीं। जैसे प्रारंभ में वीर्य होता है और फिर एक निर्धारित समय के पश्चात बच्चा बनकर निकलता है। इसी प्रकार से इस्लाम के विरोध का बच्चा निकल चुका है और अब वह प्रौढ़ होकर पूरे जोश और शक्ति में है।"

यही हम आजकल देख रहे हैं कि संसार में हर स्थान पर सांसारिक लोग भी इस्लाम का विरोध कर रहे हैं। उनके उद्‌देश्य भौगोलिक शक्ति प्राप्त करना है, राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना है परन्तु इस्लाम को बदनाम करके वे शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। इस्लामी देशों की दौलत को प्राप्त करने के लिए भी अर्थात् जैसे धार्मिक दृष्टि से भी और सांसारिक दृष्टि से भी हर प्रकार से आजकल इस्लाम को, मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा है। आप फ़रमाते हैं कि पूरे जोश और शक्ति से आजकल यह विरोध हो चुका है। आप ने फ़रमाया -

"अतः उसे तबाह करने के लिए ख़ुदा तआला ने आकाश से एक शस्त्र उतारा और उस घृणित शिर्क को जो आंतरिक एवं बाह्य तौर पर पैदा हो गया था दूर करने के लिए और फिर ख़ुदा तआला का एकेश्वरवाद (तौहीद) और प्रताप को स्थापित करने के लिए इस सिलसिले को स्थापित किया है।"

आंतरिक तौर पर भी मुसलमानों में क़ब्रों की पूजा करके एक शिर्क पैदा हो चुका है। बाह्य तौर पर भी अल्लाह तआला को मानने से लोग इन्कारी हो चुके हैं, और शिर्क वैसे भी बढ़ रहा है। दुनियादारी के शिर्क में ग्रस्त हो चुके हैं। इसलिए आप ने फ़रमाया कि इस हर प्रकार के शिर्क का निवारण करने के लिए अल्लाह तआला ने

सिलसिला स्थापित किया है आप फ़रमाते हैं कि -

"यह सिलसिला ख़ुदा की ओर से है और मैं बड़े दावे और बुद्धिमत्ता से कहता हूँ कि निस्सन्देह यह ख़ुदा की ओर से है। उसने अपने हाथ से इसको स्थापित किया है जैसा कि उसने अपने समर्थनों एवं सहायताओं से जो इस सिलसिले के लिए उसने प्रकट की हैं दिखा दिया है।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द - 3, पृष्ठ - 90 से 93, संस्करण 1985 ई० लन्दन से प्रकाशित)

फिर आप ने इस बात को और अधिक स्पष्ट किया और यह फ़रमाते हुए कि अल्लाह तआला की ओर से आने वाले दो प्रकार के होते हैं। एक शरीअत वाले और एक जो शरीअत वाले के कार्य को जारी रखने के लिए ख़ुदा तआला की ओर से आते हैं। आप फ़रमाते हैं कि -

"ख़ुदा (तआला) की ओर से मामूर होकर आने वाले लोगों के दो वर्ग होते हैं। एक वे जो शरीअत वाले होते हैं जैसे मूसा अलैहिस्सलाम और एक वे जो शरीअत को जीवित करने के लिए आते हैं। जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम। इसी तरह हमारा ईमान है कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूर्ण शरीअत ले कर आए जो नुबुव्वत के ख़ातम थे। इसलिए युग की पात्रताओं और योग्यताओं ने ख़त्मे नुबुव्वत कर दिया था। इसलिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम के बाद हम किसी दूसरी शरीअत के आने के क़ाइल कदापि नहीं। हाँ जैसे हमारे ख़ुदा के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मूसा के मसील थे। इसी प्रकार आप (सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम) के सिलसिले का ख़ातमुल ख़ुलफ़ा अर्थात् मसीह मौऊद है आवश्यक था कि मसीह अलैहिस्सलाम की तरह आता। अतः मैं वही ख़ातमुल ख़ुलफ़ा और मसीह मौऊद हूँ। जैसे मसीह कोई शरीअत लेकर नहीं आए थे अपितु मूसा की शरीअत को ज़िन्दा करने के लिए आए थे। मैं कोई नई शरीअत लेकर नहीं आया और मेरा दिल कदापि नहीं मान सकता कि पवित्र क़ुर्आन के बाद अब कोई और शरीअत आ सकती है। क्योंकि वह पूर्ण शरीअत और ख़ातमुलकुतुब है। इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने मुझे मुहम्मदी शरीअत को ज़िन्दा करने के लिए इस सदी में ख़ातमुल ख़ुलफ़ा के नाम से अवतरित किया है। मेरे इल्हाम जो मुझे ख़ुदा तआला की ओर से होते हैं और जो हमेशा लाखों लोगों में प्रकाशित किए जाते हैं और छापे जाते हैं तथा नष्ट नहीं किए जाते वे नष्ट न होंगे और वे क़ायम रहेंगे।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द - 2, पृष्ठ - 272, संस्करण 1985 ई० लन्दन से प्रकाशित)

फिर आपने बड़े ज़ोरदार शब्दों में यह भी फ़रमाया कि मैंने जो कुछ पाया वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ही वरदान है। अतः इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि -

"मैं क़सम खा कर कहता हूं कि मेरे दिल में असली और वास्तविक जोश यही है कि समस्त प्रशंसाएँ, योग्यताएं और समस्त सुंदर विशेषताएं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर लौटाऊं मेरी खुशी इसी में है और मेरे अवतरित होने का मूल उद्देश्य यही है कि ख़ुदा तआला की तौहीद और रसूले करीम सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम का सम्मान दुनिया में स्थापित हो। मैं निस्सन्देह जानता हूं कि मेरे बारे में जितने प्रशंसनीय वाक्य और महत्त्वपूर्ण बातें अल्लाह तआला ने वर्णन की हैं यह भी वास्तव में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की ओर लौटने वाली हैं।"

अर्थात् उसी ओर सम्बद्ध हो रही हैं आप की ही कृतज्ञ हैं। आपकी दानशीलता से ही हैं आप फ़रमाते हैं -

"इसलिए कि मैं आप[स॰अ॰व॰] का ही दास हूं और आप ही के नुबुव्वत के दीपक से प्रकाश प्राप्त करने वाला हूं और स्थाई तौर पर हमारा कुछ भी नहीं है। इसी कारण से मेरी दृढ़ आस्था है कि यदि कोई व्यक्ति आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद यह दावा करे कि मैं स्थाई तौर पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लाभान्वित हुए बिना मामूर हूं और ख़ुदा तआला से संबंध रखता हूं तो वह धिक्कृत और अपमानित है। ख़ुदा तआला की हमेशा के लिए मुहर लग चुकी है इस बात पर कि कोई व्यक्ति अल्लाह के मिलने के दरवाजे से आ नहीं सकता सिवाए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण के।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द - 3, पृष्ठ - 287, संस्करण 1985 ई० लन्दन से प्रकाशित)

अल्लाह तआला की ओर जाने के लिए अल्लाह तआला को मिलने के लिए एक ही दरवाज़ा है और वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अस्तित्व है।

अतः यह हमारे ईमान का भाग है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ातमुल अंबिया हैं और पवित्र क़ुर्आन ख़ातमुलकुतुब और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कोई नई शरीअत लेकर नहीं

आए और न अब कोई नई शरीअत आ सकती है। और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बुलंद और श्रेष्ठतम पद की ही यह मांग है कि ख़ुदा तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण के कारण तथा आपकी ग़ुलामी में आने के कारण आने वाले मसीह मौऊद और महदी मा'हूद को नबी के पद से सम्मानित किया। किसी और नबी को यह स्थान प्राप्त नहीं हुआ कि उसे शरीअत वाले नबी की ग़ुलामी के कारण, किसी नबी की ग़ुलामी के कारण मामूर होने का दर्जा मिला हो। अतः हमारा यह ईमान है और हम इस ईमान पर स्थापित हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और पवित्र क़ुर्आन ख़ातमुलकुतुब है और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे ग़ुलाम हैं और वही मसीह मौऊद और ख़ातमुल ख़ुलफ़ा हैं जिनके आने की खबर हमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी थी और उसे अपना सलाम पहुंचाने का आदेश दिया था।

(अलमौ'जिमुल औसत जिल्द - 3, पृष्ठ - 383से 384 हदीस नं 4898 बाबुलऐन मन इस्मुहू ईसा, प्रकाशक दारुल फ़िक्र उम्मान, अर्दन 1999)

जो अहमदी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्थान इससे ऊपर समझता है वह निस्सन्देह मुसलमान नहीं है जैसा कि मैंने पहले भी कहा दूसरे मुसलमान उलेमा और हुकूमतें इस बात को लेकर कि हम ख़त्मे नुबुव्वत पर विश्वास नहीं रखते और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अंतिम नबी नहीं मानते। निस्सन्देह हम पर हर प्रकार के फ़त्वे लगाएं

और अहमदियों को कष्ट पहुंचाने तथा क़त्ल करने के लिए सब मुसलमानों को उकसाएँ परन्तु हमारे ईमान को इंशाअल्लाह तआला कभी हिला नहीं सकते। क्योंकि हमने वह पाया जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से चाहते थे। हमने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इश्क़ और प्रेम के आचरण इसी मसीह मौऊद और महदी मा'हूद से सीखे हैं जिनकी जमाअत में सम्मिलित होने के कारण यह नाममात्र उलेमा हमें काफ़िर कहते हैं और इस्लाम के दायरे से बाहर निकालते हैं।

आज अहमदियत के इन विरोधियों की इन बातों के कारण और शत्रुओं की शत्रुताओं के कारण हर अहमदी पर पहले से बढ़कर यह ज़िम्मेदारी लागू होती है कि वह अपने ईमान और अमल की हालत में एक ऐसा परिवर्तन लाएं जो ख़ुदा तआला को हमसे बहुत करीब कर दे। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि यह ज़मीनी विरोध हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते यदि अर्श के ख़ुदा से हमारा सदृढ़ संबंध है।

(कश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 19, पृष्ठ - 15 से उदधृत)

अत: हमें अर्श के ख़ुदा से संबंध पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए। निस्सन्देह वह दिन आने वाले हैं जब समस्त विरोधी हवा हो जाएंगे, जब विरोधी औंधे मुंह गिराए जाएंगे, जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हुए ख़ुदा तआला के समस्त वादे पूरे होंगे। परन्तु इसके लिए जैसा कि मैंने कहा हमें अपने अंदर एक पवित्र परिवर्तन पैदा करना होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमारी ईमानी और क्रियात्मक

हालतों के क्या मापदंड देखना चाहते हैं इस बारे में आप एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि -

"हे मेरे दोस्तो! जो मेरे बैअत के सिलसिले में सम्मिलित हो ख़ुदा हमें और तुम्हें उन बातों की सामर्थ्य दे जिनसे वह प्रसन्न हो जाए। आज तुम थोड़े हो और तिरस्कार की दृष्टि से देखे गए हो और एक विपत्ति का समय तुम पर है कि इस सुन्नत के अनुसार जो हमेशा से जारी है हर ओर से कोशिश होगी कि तुम ठोकर खाओ और तुम हर प्रकार से सताए जाओगे और तुम्हें भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें सुननी पड़ेंगी प्रत्येक जो तुम्हें जीभ या हाथ से दुःख देगा वह सोचेगा कि इस्लाम की सहायता कर रहा है। कुछ आकाशीय विपत्तियां भी तुम पर आएंगी था कि तुम हर प्रकार से परखे जाओ। अतः तुम इस समय सुन रखो कि तुम्हारे विजयी हो जाने का यह मार्ग नहीं कि तुम अपने खुश्क तर्कशास्त्र से काम लो या हंसी ठट्ठे के मुकाबले पर हंसी ठट्ठे की बातें करो या गाली के मुक़ाबले पर गाली दो। क्योंकि यदि तुमने यही मार्ग ग्रहण किए तो तुम्हारे दिल कठोर हो जाएंगे और तुम में केवल बातें ही बातें होंगी जिनसे ख़ुदा तआला नफ़रत करता है और नफ़रत की नज़र से देखता है। इसलिए तुम ऐसा न करो कि अपने ऊपर दो लानतें जमा कर लो, एक लोगों की और दूसरी ख़ुदा की भी।"

आप ने फ़रमाया :-

"निस्सन्देह स्मरण रखो कि लोगों की लानत यदि ख़ुदा तआला की लानत के साथ न हो कुछ भी चीज़ नहीं। यदि ख़ुदा हमें नष्ट करना न चाहे तो हम किसी से नष्ट नहीं हो सकते। परन्तु यदि वही

हमारा शत्रु हो जाए तो कोई हमें शरण नहीं दे सकता।"

आप फ़रमाते हैं -

"हम ख़ुदा तआला को कैसे राज़ी करें और कैसे वह हमारे साथ हो। इसका उसने मुझे बार-बार यही उत्तर दिया है कि संयम (तक़्वा) से।"

इसलिए संयम पैदा करना आवश्यक है और संयम में बढ़ना हम पर आवश्यक है। और संयम यही है कि हर नेकी में हम आगे से आगे बढ़ने की कोशिश करें। आप फ़रमाते हैं -

"अतः हे मेरे प्यारे भाइयो! कोशिश करो ताकि संयमी बन जाओ। अमल (कर्म) के बिना सब बातें तुच्छ हैं और निष्कपटता के बिना कोई कर्म स्वीकृत नहीं। अतः संयम यही है कि इन समस्त हानियों से बच कर ख़ुदा तआला की ओर क़दम उठाओ और संयम के बारीक मार्गों का ध्यान रखो। सर्वप्रथम अपने हृदयों में विनय और शुद्धता तथा निष्कपटता पैदा करो और सचमुच हृदयों के सहनशील, शान्तिप्रिय और ग़रीब बन जाओ।" हृदयों में नरमी पैदा करो

"कि प्रत्येक भलाई और बुराई का बीज पहले हृदय में ही पैदा होता है" फ़रमाया कि "यदि तेरा हृदय बुराई से ख़ाली है तो तेरी जीभ भी बुराई से ख़ाली होगी और ऐसा ही तेरी आँख और तेरे समस्त अवयव। प्रत्येक प्रकाश या अंधकार पहले हृदय में ही पैदा होता है और फिर धीरे-धीरे सम्पूर्ण शरीर पर छा जाता है।"

आप फ़रमाते हैं -

"इसलिए अपने हृदयों को हर समय टटोलते रहो। और जैसे पान खाने वाला अपने पानों को फेरता रहता है और रद्दी टुकड़े को

काटता है और बाहर फेंकता है इसी प्रकार तुम भी अपने हृदयों के गुप्त विचारों, को गुप्त आदतों, गुप्त भावनाओं और गुप्त महारतों को अपनी दृष्टि के सामने फेरते रहो और जिस विचार या आदत अथवा महारत को रद्दी हो उसको काट कर बाहर फेंको, ऐसा न हो कि वह तुम्हारे सम्पूर्ण हृदय को अपवित्र कर दे और फिर तुम काटे जाओ।"

आप फ़रमाते हैं -

"फिर इसके बाद कोशिश करो और ख़ुदा तआला से शक्ति और हिम्मत मांगो कि तुम्हारे हृदयों के पवित्र इरादे तथा पवित्र विचार, पवित्र भावनाएं, पवित्र इच्छाएं, तुम्हारे अवयय और तुम्हारी समस्त शक्तियों के वरदान द्वारा प्रकट और पूर्ण हों।"

अर्थात् व्यावहारिक तौर पर भी इसकी अभिव्यक्ति होनी चाहिए

"ताकि तुम्हारी नेकियाँ पूर्णता तक पहुंचें क्योंकि जो बात दिल से निकले और दिल तक ही सीमित रहे वह तुम्हें किसी पद तक नहीं पहुंचा सकती।"

आप ने फ़रमाया -

"ख़ुदा तआला की श्रेष्ठता अपने दिलों में बैठाओ और उसके प्रताप को अपनी आँखों के सामने रखो और याद रखो कि पवित्र क़ुर्आन में 500 के लगभग आदेश हैं और उसने तुम्हारे प्रत्येक अंग, प्रत्येक शक्ति, प्रत्येक बनावट, प्रत्येक हालत, प्रत्येक आयु और प्रत्येक प्रतिभा का पद, स्वभाव का पद, साधना का पद, व्यक्तिगत और सामूहिक पद दृष्टि से तुम्हारी एक प्रकाशमय दावत की है।"

अतः बुद्धि के अनुसार भी, प्रकृति के अनुसार भी और जो अल्लाह तआला से संबंध है उसके अनुसार भी, व्यक्तिगत तौर पर भी

और सामूहिक तौर पर भी अल्लाह तआला ने एक दावत की है और उसको हर अहमदी को समझने की ज़रूरत है। और उसके लिए जहाँ ज्ञान प्राप्त करना है, जहाँ ईमान की उन्नति करनी वहां व्यावहारिक तौर पर भी उसको अभिव्यक्त करना है। आप फ़रमाते हैं -

"इसलिए तुम इस दावत को कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार करो और जितने भोजन तुम्हारे लिए तैयार किए गए हैं वह सब खाओ और सब से लाभ प्राप्त करो। जो व्यक्ति इन सब में से एक को भी टालता है मैं सच-सच कहता हूँ कि वह अदालत के दिन पकड़ के योग्य होगा। यदि निजात (मुक्ति) चाहते हो तो वृद्धों का धर्म ग्रहण करो और विनम्रता से पवित्र क़ुर्आन का जुआ अपनी गर्दनों पर उठाओ कि दुष्ट तबाह होगा और उद्‌दण्ड नर्क में गिराया जाएगा परन्तु जो ग़रीबी से गर्दन झुकाता है वह मौत से बच जाएगा। दुनिया की समृद्धि की शर्तों से ख़ुदा तआला की इबादत मत करो।"

सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए अपनी इबादत में शर्तें न लगाओ कि इस प्रकार ये इबादत नहीं है। आप फ़रमाते हैं कि यदि तुम सांसारिक शर्तें लगाओगे तो

"ऐसे विचार के लिए गढ़ा सामने है अपितु तुम इसलिए उसकी इबादत करो कि इबादत स्रष्टा का तुम पर एक अधिकार है। चाहिए कि इबादत ही तुम्हारा जीवन हो जाए और तुम्हारी नेकियों का केवल यही उद्‌देश्य हो कि वह वास्तविक प्रियतम तथा वास्तविक उपकारी प्रसन्न हो जाए। क्योंकि जो इस से निम्नतर विचार है वह ठोकर का स्थान है।"

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द -3, पृष्ठ - 546 से 548)

अल्लाह तआला हमें इन समस्त बातों पर अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। प्रतिदिन हमारा हर क़दम नेकियों में बढ़ने वाला क़दम हो। पाकिस्तान के अहमदियों को भी विशेष तौर पर दुआओं की ओर ध्यान देना चाहिए। और दुआओं तथा अपनी हालतों की ओर ध्यान देते हुए उनको अधिक से अधिक ख़ुदा तआला का सानिध्य प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए कि वहां सर्वाधिक कठोरताएं अहमदियों पर वैध रखी जा रही हैं और प्रतिदिन एक नया क़ानून उनके लिए पारित किया जा रहा है, बनाया जा रहा है। अल्लाह तआला समस्त अहमदियों को अपनी सुरक्षा और शान्ति में रखे। शत्रु की प्रत्येक योजना असफ़ल हो।

जल्से के बाद समस्त सम्मिलित लोग जो इस समय क़ादियान में मौजूद हैं अल्लाह तआला उन्हें कुशलतापूर्वक अपने घरों में लेकर जाए और जल्से के दिनों की बरकतों को हमेशा अपने जीवनों का भाग बनाने वाले हों।

इसके बाद हम दुआ करेंगे परन्तु दुआ से पहले मैं वहां की उपस्थिति की रिपोर्ट भी दे दूँ। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस समय क़ादियान के जल्से में भी चवालीस देशों का प्रतिनिधित्व है और बीस हज़ार अड़तालीस लोगों की उपस्थिति हे जो गत वर्ष से लगभग छः हज़ार अधिक है और यहाँ की जो उपस्थिति है वह भी पांच हज़ार तीन सौ है। अल्लाह तआला समस्त सम्मिलित लोगों का संरक्षक और सहायक हो। अमीन।

अब दुआ कर लें।